--: पंचम् परिच्छेद :--

Chapter-5

-=: पंचम् परिच्छेद :=-

Chapter-5

आल्हा-निकासी :-

राजा परमर्दिदेव के विवाह के उपरान्त महोबा चन्देलों की राजधानी बन चुकी थी और चन्देल-नरेश परमाल ने मल्हना के भाई माहिल या महीपति को उरई (उ.प्र.) की जागीर देकर महोबा से निकाल दिया था । माहिल इस अपमान से क्षुब्ध था और वह हमेशा चन्देल वंश के विनाश का स्वप्न देखता रहता था । महोबा माहिल की पैत्रिक संपत्ति थी और वह उसका उत्तराधिकारी भी था । अपनी पैत्रिक संपत्ति को दूसरे के अधिकार क्षेत्र में देखकर कौन-सा ऐसा व्यक्ति होगा, जिसे टीस न होती हो ।

आल्हा-ऊदल एवं मलखान की पराक्रम-गाथाएँ सारे देश में गूँज रही थी । राजा परमाल शान्ति पूर्वक महोबा में राज्य करने लगे थे । राजा परमाल के वैभव एवं सुखशान्ति को देखकर, माहिल को ईर्ष्या होती है और वह दिल्ली-पति महाराज पृथ्वीराज के दरबार में पहुँचता है । उसका दिल्ली में अतिथि-सत्कार किया जाता है । दिल्ली-नरेश माहिल की कुशलक्षेम पूछते हैं । माहिल पृथ्वीराज की बात सुनकर जवाब देता है, कि- महाराज, महोबा में अच्छे किस्म के हाथी और घोड़े हैं, जिन्हें दैवीय शक्ति प्राप्त है । जब तक चन्देल-नरेश के पास इस प्रकार के अद्भुत वाहन हैं, तब तक महोबा पर विजय प्राप्त करना असंभव है । इसलिए आप पहले घोड़ा करेलिया, हर-नागर, हंसामनि, बेंदुला, घोड़ा पपीहा तथा घोड़ी कबूतरी, हाथी पचशावद आदि प्राप्त कर लीजिए तत्पश्चात् महोबा पर चढ़ाई करके अपने विगत-अपमानों का बदला ले लीजिए ।

महाराज पृथ्वीराज चुगलखोर माहिल की बात सुनकर प्रसन्न हो जाते हैं और चन्देल-नरेश को पत्र लिखते हैं कि कुछ समय के लिए आपके अद्भुत घोड़े एवं हाथी पचशावद चाहिए । संदेशवाहक पत्र लेकर महोबा-दरबार में पहुँचता है । महाराज परमर्दिदेव पत्र पढ़ते हैं और आल्हा से विचार-विमर्श करते हैं । महाराज पृथ्वीराज का प्रस्ताव आल्हा को अच्छा नहीं लगता है । वे कहने लगते हैं कि—

सुनतै आल्हा बोलन लागे, हम सब मानत हुक्म तुम्हार ।
पै यह अर्ज सुनो दादा तुम, औ निज मन में लेउ विचार ।

जिन घोड़न पर चढ़े चंदेले, तिन पर चढ़े शूर चौहान ।
तुमहिं हंसौआ को डर नाहीं, सुनिकै हंसि है सकल जहान ।§1§

आल्हा की बात सुनकर राजा चंदेल कुछ चिंतित हो जाते हैं परन्तु उन्हें पृथ्वीराज चौहान के पत्रलिखित आदेश का पालन करना था । वह शस्त्र-त्याग कर चुके थे तथा युद्ध न करने की प्रतिज्ञाबद्ध थे, इसलिए वह पृथ्वीराज चौहान से युद्ध करने के पक्ष में न थे । वे दिल्ली-पति के पराक्रम से भी भलीभाँति परिचित थे । अतः महाराज परमर्दिदेव कहने लगते हैं, कि—

शब्द बेध राजा दिल्ली को, है नरनाह वीर चौहान ।
नहीं पठैहो जो घोड़न को, होइ है यहाँ बखेड़ा आय ।
तुमना जितिहौ पृथ्वीराज से, ताते घोड़ा देव पठाय ।§2§

राजा परमाल की भय-मिश्रित वाणी सुनकर ऊदल आक्रोशमय हो जाता है । चूंकि वह पृथ्वीराज की पुत्री बेला का विवाह ब्रह्मानंद से संपन्न करवा चुका था तथा रणक्षेत्र में महाराज पृथ्वीराज चौहान की वीरता देख चुका था, इसलिए वह दबाव पूर्ण सन्धि के पक्ष में न था । अतः वह राजा की हीनभावना से युक्त बात को सुनकर क्रोधातुर होकर कहने लगता है । यथा—

इतनी सुनिकै ऊदल तड़पे, नैनन गई लालरी छाय ।
करै बखेड़ा जो हमरे संग, मारौं राज्य भंग होइ जाए ।
जो कोउ देखे यहि महुबे तन, ताको लैहौं शीश कटाय ।
ब्याह कियो जब ब्रह्मानंद को, तब कहं हते वीर चौहान ।
मोहरा मारो चौहानन को, सातों भंवरि लियो डरवाय ।
सो क्यों भूल गए राजा तुम, अब क्यों डरत आप महाराज ।
गर्व न राखो काहू राजा को, हमको जानत सकल जहान ।
बावनगढ़ हमने सर कीन्हें, सिगरे राजा गए थर्राए ।
पहले घोड़ा वे मांगत हैं, पीछे लैहैं फौज सजाय ।
घोड़ा होइहैं जब हम पैना, तब हम करिहैं कौन उपाय ।
ताते मानो कही हमारी, लिखिकैं भेजि देव इंकार ।§3§

---

§1§ बड़ा आल्हखण्ड : पं० महावीर प्रसाद जी, पृ.सं. 375
व आल्हा निकासी : कुँवर अमोलसिंह भदौरिया, पृ.सं. 15.
§2§ वही : पृ.सं. 376, 16. §3§ वही : पृ.सं. 377, 17.

ऊदल की बात सुनकर महाराज परमर्दिदेव क्रोधित हो जाते हैं, उन्हें ऐसा प्रतीत होता है कि ऊदल उनकी बात का प्रतिवाद कर रहा है । वे आल्हा-ऊदल को अपमानित करते हुए महोबा से चले जाने का आदेश दे देते हैं । परमाल कहते हैं कि--

इतनी सुनि गुस्सा होइ कै तब, बोले तुरत रजा परमाल ।
कही हमारी तुम मानी ना, खाली करो महोबा गाँव ।
पानी पी हो दसपुरवा में, तौ तुम पिओ रक्त की धार ।
भोजन करिहो जो पुरवा में, तौ तुम खाउ गऊ को मांस ।
शय्या सोइ हौ जो नारी संग, मानों परे मात के साथ ।
दई तलाकैं चन्देले ने, सो आल्हा हिय गई समाय ।§1§

परमाल की अपमान जनक बात सुनकर आल्हा अपनी राजधानी दसपुरवा जाते हैं और महोबा छोड़ने की तैयारी कर देते हैं । देवल माता उन्हें समझाती हैं कि- राजा परमाल वृद्ध एवं पिता-तुल्य हैं, तुम्हें उनकी बातों का ध्यान नहीं देना चाहिए । परन्तु शपथ सुनकर वह आल्हा-ऊदल के साथ महोबा त्यागने के लिए सहमत हो जाती हैं । प्रजा आल्हा-ऊदल की वीरता का बखान करती हुई क्रन्दन करने लगती है । समाचार पाकर परमाल-नरेश की सभी रानियाँ विलाप करने लगती हैं ।

ढेबा के परामर्श के अनुसार आल्हा अपने परिवार के साथ कन्नौज की ओर प्रस्थान करते हैं, उन्हें पूर्ण विश्वास था कि कन्नौज-नरेश जयचंद दुर्दिनों में उनकी सहायता करेंगे । रानी मल्हना घटना की सूचना सिरसागढ़ भेजती है वहाँ से मलखान तुरन्त महोबा आते हैं । वे आल्हा को समझाते हैं तथा अतिरिक्त किला बनाकर रहने की व्यवस्था करने का आश्वासन भी देते हैं, परन्तु आल्हा उनकी बात से सहमत नहीं होते हैं । निराश मलखान सिरसा चले जाते हैं ।

आल्हा, ऊदल, ढेबा, माता देवल एवं समस्त रानियाँ भादों माह की चिलचिलाती धूप व तेज बरसात के मौसम में दस हजार सैनिकों के साथ कालपी §उ.प्र.§ में यमुना नदी को पार करके सियरामऊ पहुँचते हैं । मार्ग में नाना-प्रकार की विपत्तियों का सामना करना पड़ता है । वे सियरामऊ में ही पड़ाव डाल देते हैं और राजा जयचंद की मनःस्थिति को जानने के लिए आल्हा उनके दरबार में जाते हैं ।

द्रष्टव्य : §1§ आल्हा निकासी : कुँवर अमोलसिंह - पृ.सं. 19.

दरबार में पहुँचकर वे कन्नौज-नरेश को प्रणाम करके सारा समाचार सुनाते हैं तथा आश्रय की गुहार करते हैं । राजा जयचंद आल्हा के प्रस्ताव को नामंजूर कर देते हैं क्योंकि वे राजा परमाल से अपने सम्बन्ध खराब नहीं करना चाहते थे ।

आल्हा निराश होकर सिरामऊ में वापस लौट आते हैं । ऊदल आल्हा की वार्ता से अवगत होकर वह क्रोधित हो जाता है । वह देवी फूलमती के मन्दिर में जाकर उनका आह्वान करता है, देवी प्रसन्न होकर उसे वरदान देती है । अब ऊदल घोड़ा बेंदुला पर सवार होकर कन्नौज-बाजार में लूटपाट और उपद्रव मचा देता है । उपद्रव की सूचना पाकर महाराज जयचंद लाखन को ऊदल का सामना करने के लिए भेजते हैं । इसी अन्तराल में बनारस वाले ताल्हन सैयद जयचंद के दरबार में उपस्थित होते हैं । लाखन की युद्ध हेतु तैयारी को देखकर कारण पूछते हैं । जब उन्हें यह पता चलता है कि लाखन राजा ऊदल का मुकाबला करने जा रहे हैं तो वे कन्नौज-नरेश जयचंद को समझाते हुए कहते हैं कि-"आल्हा-ऊदल दोनों महापराक्रमी योद्धा हैं । ऊदल ने दिल्ली-नरेश पृथ्वीराज चौहान के दरवाजे पर हाथी पछाड़ दिया था । यदि आप इन्हें आश्रय प्रदान करेंगे, तो आपकी शक्ति अजेय हो जाएगी ।" ताल्हन सैयद की बात सुनकर जयचंद उनकी वीरता से प्रभावित तो होते हैं परन्तु उनकी वीरता की परीक्षा लेना चाहते हैं ।

आल्हा-ऊदल की वीरता की परीक्षा लेने के लिए महाराज जयचंद अपने दो मदमस्त हाथियों- जौंरा-भौंरा को मदिरापान कराके पागल बना देते हैं और इनसे युद्ध करने के लिए आल्हा-ऊदल को आमंत्रित करते हैं । आल्हा-ऊदल पुनः जयचंद के दरबार में हाजिर होते हैं और उनके प्रस्ताव को सुनते हैं । प्रस्ताव सुनकर ऊदल तुरन्त उनकी चुनौती स्वीकार कर लेता है । दोनों हाथी प्रांगण में स्वतंत्र रूप से छोड़ दिए जाते हैं । ऊदल अपने घोड़े पर सवार होकर उनका सामना करता है । इस आश्चर्यजनक समारोह को देखने के लिए कन्नौज शहर की प्रजा उमड़ पड़ी । राजा, मंत्री, सेठ, साहूकार सभी उपस्थित हुए । ऊदल का दोनों हाथियों से भयंकर युद्ध हुआ । ऊदल कुशल खिलाड़ी तो था ही, कुछ ही समय में वह जौंरा हाथी को भाला के प्रहार से धराशायी कर देता है तथा भौंरा हाथी के दाँत पकड़कर पछाड़ देता है । यह अद्भुत दृश्य देखकर राजा जयचंद दंग रह जाते हैं । वे सोचने लगते हैं कि ऐसे पराक्रमी शूरों को आश्रय देना अवश्य ही लाभकारी सिद्ध होगा । अतः महाराज प्रसन्न होकर

रिजिगिरि {कन्नौज राज्य का एक कस्बा} नामक छोटी-सी जागीर आल्हा को पुरस्कार स्वरूप प्रदान करते हैं ।

आल्हा, महाराज जयचंद के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए रिजिगिर चले जाते हैं । रिजिगिरि में आल्हा अपने परिवार और परिजनों सहित निवास करने लगते हैं । इस प्रकार राजा जयचंद और आल्हा में घनिष्ठ मित्रता हो जाती है, वे एक दूसरे के सुख-दुख के साथी बन जाते हैं ।

परमाल रासो में वर्णित अगली कथा लाखन के ब्याह की कथा है ।

बूँदी {कामरू बंगाल देश} का संग्राम {लाखनराना का ब्याह} :-

कामरू या बूँदी बंगाल प्रदेश का एक छोटा-सा राज्य था जहाँ गंगाधर नाम का राजा राज्य करता था । वह महा पराक्रमी था । उसके एक अत्यन्त रूपवती एवं गुणवती पुत्री थी, जिसका नाम कुसुमा था । सोलह वर्ष की अवस्था में ही राजा गंगाधर उसके विवाह की बात सोचने लगे । तत्कालीन समाज में बाल-विवाह प्रथा का प्रचलन था, उसका कारण था मुगल बादशाहों का आतंक तथा देशीय राजाओं के आक्रमण ।

राजा गंगाधर अपनी रानी के परामर्श के अनुसार अपने दोनों पुत्रों- मोती-सिंह व जवाहरसिंह को बुलाकर अपनी पुत्री के विवाह का प्रस्ताव रखते हैं । अपने पिता के प्रस्ताव का समर्थन करते हुए दोनों पुत्र पुरोहित को बुलाकर शुभ मुहूर्त में विवाह हेतु टीका तैयार करते हैं । राजसी वैभव व राज-परिवार की गरिमा के अनुसार जवाहरसिंह अपनी बहिन का टीका लेकर परिजनों सहित प्रस्थान करता है । राजा गंगाधर उसे निर्देश देते हैं कि उचित एवं कुलीन राजघराने में अपनी बहिन का टीका चढ़ा कर आओ परन्तु बनाफर वंश में टीका मत चढ़ाना ।

जवाहरसिंह सर्वप्रथम पृथ्वीराज चौहान के दरबार में जाते हैं । टीका का प्रस्ताव सुनकर महाराज पृथ्वीराज इंकार कर देते हैं । इसके बाद वह पथरीगढ़-नरेश गजराजा के पास जाता है तत्पश्चात बौरीगढ़ आदि । सभी राजा विवाह-प्रस्ताव को नामंजूर कर देते हैं क्योंकि बूँदी वह राज्य था, जहाँ जादू का संग्राम संभाव्य था । अब शेष रह जाता था- कन्नौज गढ़ । जवाहरसिंह निराश होकर कन्नौज गढ़ की ओर

जाता है । राजा जयचंद के दरबार में पहुँचकर, अपने पिता के संदेश को सुनाता है और बहिन का टीका चढ़ाना चाहता है । पहले तो राजा जयचंद बूँदीगढ़ का नाम सुनकर शंकित हो जाते हैं परन्तु आल्हा के समझाने पर वह अपनी सहमति प्रदान करते हैं ।

रतीभान के पुत्र लाखनसिंह का टीका चढ़ाने की तैयारियाँ होने लगती हैं । लाखन जयचंद का भतीजा था । तोरण-पताकाओं से राजधानी की सजावट की जाती है । महलों में मंगलगीत गाए जाते हैं । शुभ मुहूर्त में जवाहरसिंह लाखन को टीका चढ़ाते हुए उनका तिलक करता है । इस शुभ अवसर पर अपशकुन होता है, तो लाखन की माँ तिलका शंकित हो जाती है, क्योंकि लाखन उनका इकलौता पुत्र था । उनके पिता रतीभान संयोगिता स्वयंवर में पृथ्वीराज के साथ युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हो गए थे । पुत्रमोह में डूबी हुई माता तिलका को ऊदल ढाढस बंधाते हुए कहते हैं कि-

बोले ऊदल तब तिलका से, माता सुनो हमारी बात ।
सगुन विचारै बनिया बाढ़, जो नित उठै बनिज को जाएं ।
सगुन विचारै न क्षत्री हैं, जो रण चढ़िकै लोह चबाय ।
गिरे पसीना जहं लाखन को, नदी खून की देउ बहाय ।
तौ मैं बेटा जस्सराज को, सातों भंवर लेंउ डरवाय ।
बिना ब्याहे जो मैं लौटौं, तौ मोहिं खाए कालिकामाय ।§1§

ऊदल की ओजस्वी तथा सार्थक वाणी सुनकर माता तिलका शांत हो जाती हैं । पुरोहित लाखन के विवाह की शुभ लगन निर्धारित करते हैं । उनके अनुसार फाल्गुन माह के कृष्ण पक्ष की शिव तेरस को विवाह का शुभ मुहूर्त निकलता है । कन्नौज में लाखन के विवाह की तैयारियाँ प्रारम्भ हो जाती हैं । सभी गणमान्य राजाओं को राजा जयचंद की ओर से आमंत्रित किया जाता है । उधर जवाहरसिंह बूँदी पहुँचकर अपने पिता को सारा समाचार सुनाता है । कुलीन एवं प्रतिष्ठित राजवंश में विवाह-सम्बन्ध स्थापित होने के कारण राजा गंगाधर अत्यन्त प्रसन्न होते हैं । तत्कालीन समय में राठौर वंश अत्यन्त प्रतिष्ठित वंश माना जाता था । राठौर वंश के राजा अजयपाल एक प्रसिद्ध राजा थे ।

नियत तिथि आने पर राठौरवंशी बारात अपने पूर्ण राजसी वैभव के साथ तैयार होती है । आल्हा, ऊदल, ढेबा, ताल्हन सैयद, जयचंद आदि पराक्रमी योद्धा

- -

§1§ बृहद् आल्हखण्ड : खेमराज प्रकाशन, बम्बई, पृ.सं. 389.

अपने-अपने सैन्यबल के साथ तैयार हो जाते हैं । हाथी पचशावद पर सवार आल्हा, भुरही हथिनी पर सवार राजा जयचंद, बेंदुला घोड़ा पर सवार उदयसिंह [उदल], घोड़ा मनोरथा पर सवार ढेबा एवं पालकी में बिराजमान लाखनसिंह ऐसे लग रहे थे, जैसे चतुरंगिनी सेना ने इन्द्रलोक पर चढ़ाई कर दी हो । माता तिलका लोकाचार का निर्वाह करके बारात को प्रस्थान करने का आदेश देती हैं । बारह दिन के सफर के बाद बारात बूँदीगढ़ पहुँचती है । सारा लश्कर बूँदीगढ़ की सीमा पर पड़ाव डाल देता है ।

आल्हा पंडित को बुलाकर परामर्श करते हैं और उचित समय में महोबागढ़ का नेगी रूपन वैवाहिक परंपरा के अनुसार बूँदी-दरबार में ऐपनवारी ले जाता है । बूँदी-नरेश राजा गंगाधर से उसका साक्षात्कार होता है । वह बारात के आगमन की सूचना देते हुए कहता है कि-"राजा जयचंद अपनी बारात लेकर आ गए हैं, उनके साथ महा-पराक्रमी योद्धा आल्हा, ऊदल, ढेबा आदि हैं । मैं उनका नेगी हूँ । मुझे द्वन्द्व-युद्ध के रूप में मेरा नेग चाहिए क्योंकि रण-कौशल ही क्षत्रियों का नेग होता है ।" राजा रूपनवारी के बात सुनकर उत्तेजित हो जाते हैं । बूँदी-दरबार में बिराजमान अन्य योद्धाओं के साथ रूपना का युद्ध होता है । वह अपना रण-कौशल दिखाकर वापस आ जाता है । रूपनवारी की वीरता देखकर राजा गंगाधर दंग रह जाते हैं । वे अपने पुत्र मोतीसिंह और जवाहरसिंह को बुलाकर कन्नौज की सेना को परास्त करने का आदेश दे देते हैं । राजा गंगाधर अपने पुत्रों को यह भी सलाह देते हैं कि-"कन्नौज की कटीली सेना को परास्त करना अत्यन्त कठिन कार्य है, उन्हें छल-प्रपंच द्वारा ही परास्त किया जा सकता है । अतः तुम कुलरीति का प्रपंच करते हुए अकेले लाखन को महलों में सादर बुला लाओ । यहाँ आने पर लाखन की हत्या कर दी जाएगी और बिना प्रयास ही हम शत्रु-सेना पर विजय प्राप्त कर सकेंगे ।" ऐसा ही होता है । मोतीसिंह और जवाहरसिंह बारात में जाकर राजा जयचंद को सादर प्रणाम करते हैं और अपने पिता के प्रस्ताव को उनके समक्ष व्यक्त करते हैं । यह प्रपंच गंगाधर इसलिए करना चाहते थे क्योंकि राजा जयचंद की बारात में बनाफर योद्धा आल्हा-ऊदल मुख्य थे और बनाफर वंश ओछा वंश माना जाता था ।

मोतीसिंह व जवाहरसिंह से प्रस्ताव को सुनकर आल्हा शंकित हो जाते हैं ।

द्रष्टव्य : आल्हखण्ड का कथाचक्र - डॉ० वीरेन्द्र निर्झर.

वह महाराज जयचंद को सलाह देते है कि- महाराज, इसमें धोखा प्रतीत होता है । आल्हा कहने लगते हैं कि---

बोले आल्हा तब लरकनि ते, हमरे रीति यही चलि आय ।
जैहैं सहबाला दूल्हा संग, औ नेगी सब पै हैं साथ ।
नेगी झगरि हैं जब मंडप तर, तब हम करि हैं कौन उपाय ।
अकिले लाखन को न भेजें, हमरे बचन करौ परमान ।§1§

आल्हा के परामर्श के अनुसार ऊदल आदि वीर नेगियों की वेशभूषा में लाखन के साथ गंगाधर के महलों में जाते हैं । पूर्व निर्धारित योजना के अनुसार महल में पहुँचते ही गढ़ के फाटक बंद कर दिए जाते हैं । महलों में अन्य नेगियों §वीरों§ को रोक दिया जाता है । ऊदल व लाखन के हथियार भी महलों में यह कहकर रखवा दिए जाते हैं कि विवाह के अवसर पर हथियारों की कोई आवश्यकता नहीं है । ऊदल के शंका करने पर मोतीसिंह गंगाजल की शपथ ग्रहण कर लेता है । लाखन व ऊदल आश्वस्त होकर विवाह-मंडप में पधारते हैं । मोतीसिंह, ऊदल व लाखन को पहले भोजन कराना चाहता है इसलिए दोनों वीर ज्यौनार §भोजन§ पर जाते हैं । भोजन करते समय ही मोतीसिंह अचानक आक्रमण कर देता है । महलों में छिपे हुए बूँदीगढ़ के योद्धा भी एक साथ निहत्थे लाखन और ऊदल पर टूट पड़ते हैं । लाखन-ऊदल उनका सामना करते हैं तथा उनके द्वारा किए गए कपट-व्यवहार के लिए धिक्कारते हैं । अन्त में दोनों योद्धा बन्दी बना लिए जाते हैं और उन्हें गहरी खाई में डाल दिया जाता है ।

गंगाधर की पुत्री कुसुमा को जब इस घटना का समाचार मिलता है, तो वह अपने पिता द्वारा किए गए दुर्व्यवहार के लिए पश्चाताप करती है । अवसर पाकर, वह बन्दी लाखन और ऊदल से मुलाकात करती है । कुसुमा द्वारा सहानुभूति व्यक्त करने पर लाखन क्रोधित होकर उसे धिक्कारते हुए कहते हैं, कि---

बोले लाखन तब कुसुमा ते, रानी घटिया पिता तुम्हार ।
भैया तुम्हरे दोऊ घटिया हैं, गंगा करी हमारे साथ ।
सब हथियार धराय द्वार पर, अपनी बाँधि लई तलवारि ।
भोजन करि हैं ना तुम्हरे कर, नहिं यह धरम क्षत्रिपनक्यार ।
हमकों चाहौ जो तुम रानी, आल्है खबरि देउ पहुँचाय ।§2§

---

§1§ लाखन का ब्याह : कुँवर अमोल सिंह, पृ.सं. 98.
§2§ आल्हखण्ड : वेदराज, पृ.सं. 287.

लाखन की तीखीं बातें सुनकर कुसुमा लज्जित हो जाती है । महलों में आकर अपनी मालिन के द्वारा वह आल्हा के पास लाखनराना का संदेश भेजती है । महलों का समाचार पाते ही आल्हा, देबा को जंग करने का आदेश देते हैं । वह कुछ ही क्षणों में लश्कर सहित रणक्षेत्र में उपस्थित हो जाता है । मोतीसिंह व जवाहरसिंह भी मुकाबला करने के लिए हाज़िर हो जाते हैं । दोनों सेनाओं में भयंकर युद्ध होता है । तोपों के युद्ध के उपरान्त भालों, बरछों तथा तलवारों का अंधाधुंध प्रयोग किया जाता है । कन्नौज-निवासी वीर धनुआं तेली, लाला तमोली तथा ताल्हन सैयद आदि को अपना-अपना रण-कौशल दिखाने का अवसर मिलता है । तलवारों की खटखटाहट तथा तोपों की घरघराहट से आसमान फटने लगता है । हाथी व घोड़ों के चीखने-चिल्लाने की आवाजों से रणक्षेत्र कोलाहल युक्त हो जाता है । ऐसा माना जाता है कि इस भीषण संग्राम में कनवज की सेना के तीन लाख तथा बूँदी के एक लाख सैनिक वीरगति को प्राप्त हो जाते हैं ।

युद्ध की भीषण क्षति का समाचार सुनकर आल्हा चिंतित हो जाते हैं । ऐसी विषम परिस्थितिमेंआल्हा अपनी आराध्या देवी का आह्वान करते हैं । देवी प्रसन्न होकर अपने भक्त से दुख का कारण पूंछती है । आल्हा बूँदी-युद्ध की विजय के लिए देवी से सहायता मांगते हैं । चण्डी देवी की आभा बोलती है, कि-"जब तक सिरसागढ़ से वीर मलखान तथा महोबा से ब्रह्मानंद नहीं आएंगे, तब तक न तो तुम्हारी विजय हो सकती है और न हि लाखन का ब्याह सम्पन्न हो सकता है । अतः उन्हें तुरन्त सूचना प्रेषित कर, बुलाओ ।"

आल्हा, बूँदीगढ़ की समस्त घटनाओं का विवरण प्रस्तुत करते हुए मलखान तथा ब्रह्मानंद को पत्र लिखते हैं और तुरन्त ही संदेशवाहक द्वारा उन्हें महोबा तथा सिरसागढ़ भेजते हैं । संदेशवाहक सर्वप्रथम महोबा जाकर ब्रह्मानंद को सूचना देता है परन्तु ब्रह्मानंद के दिल में कोई प्रतिक्रिया नहीं होती है, क्योंकि वे आल्हा से रूष्ट थे । कारण यह था कि आल्हा-ऊदल रानी मल्हना [ब्रह्मानंद की माता] के वात्सल्य को ठुकरा कर कन्नौज चले गए थे । महोबा के बाद संदेशवाहक सिरसा जाता है, वहां भी मलखान कोई खास उत्साहित नहीं प्रतीत होते हैं । मलखान भी आल्हा से रूष्ट थे क्योंकि आल्हा ने मलखान की बात को अस्वीकार कर, कन्नौज में शरण लेना स्वीकार किया था ।

आल्हा द्वारा प्रेषित पत्र के समाचार से, जब रानी गजमोतिन (मलखान की पटरानी) अवगत होती है तो वह सिरसा-नरेश का भाव-प्रबोधन करती है । वह पथरीगढ़ के संग्राम में अर्थात मलखान के ब्याह में आल्हा-ऊदल के जौहर का बखान करती है और उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करती है । मलखान भी द्रवित हो जाते हैं और लश्कर सजाकर महोबा की ओर प्रस्थान कर देते हैं । महोबा पहुँचकर वे ब्रह्मानंद से मिलते हैं । पहले तो वह बूँदी चलने से इंकार कर देता है परन्तु अपनी माता मल्हना के समझाने पर, वह मलखानसिंह के साथ बूँदीगढ़ जाने के लिए सहमत हो जाता है । अब मलखान और ब्रह्मानंद अपनी कटीली फौजें लेकर आल्हा-ऊदल व लाखन की सहायतार्थ बूँदीगढ़ के लिए प्रस्थान कर देते हैं । महोबा और सिरसागढ़ दोनों सेनाओं का संगम हो गया था, जिनमें बड़े-बड़े योद्धा शामिल थे । हरनागर घोड़े पर सवार ब्रह्मानंद तथा घोड़ी कबूतरी पर सवार मलखान द्रुत गति से बूँदीगढ़ अर्थात कामरूदेश (बंगाल) की ओर बढ़ते जा रहे थे ।

मलखान और ब्रह्मानंद का बूँदी पहुँचना :-

मलखान तथा ब्रह्मानंद की मिली-जुली सेना शीघ्र ही अपने गंतव्य पर पहुँच जाती है । बूँदीगढ़ की सीमा से दस किलोमीटर दूर ही सेनाएँ पड़ाव डाल देती हैं । उधर बारात लेकर आए हुए, आल्हा तथा जयचंद, मलखान तथा ब्रह्मा के न आने से अत्यन्त चिंतित थे । वे विचार करते हैं कि-"हमारी सेना के अधिकांश योद्धा वीरगति को प्राप्त हो गए हैं । मलखान व ब्रह्मा के अभाव में लाखन का ब्याह संपन्न होना संभव नहीं है । अतः हमें महोबा तथा सिरसा जाकर मलखान व ब्रह्मा के परामर्श से पुनः सेना की तैयारी करनी होगी ।" ऐसा ही होता है । कनवज की बची हुई सेना महाराज जयचंद का आदेश पाकर वापस लौटने लगती है ।

कन्नौज-नरेश की सेना को देखकर मलखान शंकित हो जाते हैं । उन्होंने सोचा, कि शायद ब्रह्मानंद के आगमन की सूचना पाकर बूँदी-नरेश गंगाधर ने आक्रमण की तैयारी करदी हो । उधर मलखान के लश्कर को देखकर आल्हा एवं जयचंद यह सोचकर भयभीत हो जाते हैं कि गंगाधर ने उनकी सेना की घेरा बंदी कर ली है । इसी समय मलखान का संदेशवाहक आल्हा को ब्रह्मानंद के आगमन की सूचना देता है । ब्रह्मा एवं मलखान के आगमन की सूचना पाकर आल्हा तथा जयचंद फूले नहीं समाते हैं । कुछ ही क्षणों में मलखान और ब्रह्मानंद का लश्कर जयचंद के लश्कर के समीप पहुँचता है । महोबा

का राजकुमार तथा सिरसा-नरेश आल्हा तथा जयचंद को प्रणाम करते हैं । आल्हा दोनों को गले से लगा लेते हैं । भ्रातृ-प्रेम की अतिरेकता के कारण उनकी आँखों से आँसू झरने लगते हैं । आल्हा को अत्यधिक भाव विह्वल देखकर, मलखान उन्हें ढाढस बंधाते हुए कहते हैं, कि--

> बोले मलिखे तब आल्हा से, दादा धीर धरो मनमाँहि ।
> मारि गिरैहौं चहला[1] करिहौं, सातों भंवर देहौं डरवाय ।[2]

अब पुरोहित-पुत्र ढेबा के द्वारा आगामी जंग की व्यूहरचना की जाती है । युद्ध की योजना के अनुसार यह तय किया जाता है, कि ढेबा बूँदीगढ़ की उत्तर दिशा का मोर्चा संभालेगा । दक्षिण दिशा से आक्रमण करने के लिए वीर मलखान को मनोनीत किया जाता है । मलखान, ढेबा को निर्देश देते हैं, कि-"जब गंगाधर की सेनाएँ उत्तर दिशा से आक्रमण करें, तो तुम क्रमशः पीछे हटते जाना । जब उनकी सेनाएँ युद्ध करते-करते सुदूर निकल जाएंगी तो मैं दक्षिण दिशा से आक्रमण करके बूँदीगढ़ के मुख्य फाटक को तोड़कर प्रवेश कर जाऊँगा ।" ऐसा ही किया जाता है, ढेबा उत्तर दिशा से बूँदीगढ़ पर धावा बोल देता है । अचानक किए गए आक्रमण से गंगाधर विचलित हो जाता है । उधर मलखान दक्षिण दिशा की ओर से मोर्चाबंदी कर देते हैं । बूँदी नगर में खलबली मच जाती है ।

मोतीसिंह और जवाहरसिंह का संग्राम :-

अप्रत्याशित आक्रमण से भयभीत होकर बूँदी-नरेश अपने पुत्रों मोतीसिंह व जवाहरसिंह को शत्रुसेना से युद्ध करने का आदेश देते हैं । गंगाधर के दोनों बेटे अपनी सेनाएँ लेकर रणक्षेत्र में आ डटते हैं । तोपों की मार शुरू होती है । आकाश धूम्राच्छादित हो जाता है । रण में त्राहि-त्राहि मच जाती है । पूर्व निर्धारित व्यूहरचना के अनुसार जवाहरसिंह की सेना ढेबा की सेना पर टूट पड़ती है । अवसर पाकर मलखान की सेना दक्षिण दिशा से गोला-बारी प्रारम्भ कर देती है । तोपों के गोलों की बौछार से गढ़ का फाटक टूट जाता है । मलखान की सेना गढ़ के अन्दर प्रवेश कर जाती है । शत्रु-सेना का अचानक प्रवेश देखकर गंगाधर की पटरानी महलों में व्याकुल होने लगती है और निकलकर मलखान के समक्ष उपस्थित हो जाती है ।

---

[1] टुकड़े-टुकड़े ।
[2] लाखन का ब्याह : श्री भगवती प्रसाद, पृ.सं. 51.

मलखान एवं बूँदीगढ़ की महारानी के मध्य हुई वार्तालाप का एक मर्मस्पर्शी प्रसंग उल्लेखनीय है । यथा—

रानी आई रंगमहल ते, औ मलिखे ते लगी बतान ।
हाथ चलैयो ना तिरियन पे, तुम समरत्थ बनाफरराय ।
बड़े लड़ैया हौ महुबे के, तुम्हरी जगजाहिर तलवारि ।
यह सुनि मलिखे बोलन लागे, धरम की माता लगौ हमार ।
घटिया राजा बूँदी वाला, जो घटि करी हमारे साथ ।
छलिकैं लाए लाखन उदल, तिनकों ऊबे[1] दियो डराय ।
कौन से ऊबे में दोनों हैं, सो तुम हमहिं देव बतलाय ।
बोली रानी तब मलिखे ते, महल के नीचे परत दिखाय ।
ताही खंदक में दोनों हैं, तिनकों अबहिं लेउ निकराय ।[2]

रानी को यथोचित सम्मान देते हुए मलखान ऊबे के पास पहुँचते हैं जहाँ लाखन और उदल पड़े हुए थे । दोनों बुरी तरह घायल थे । मलखान उन्हें पुकारते हुए कहते हैं कि-"भैया, ब्रह्मानंद लश्कर सहित बूँदी पहुँच चुके हैं । तुम बाहर आ जाओ । तुम्हारा बड़ाभाई मलखान तुम्हें पुकार रहा है ।" मलखान की बात सुनकर लाखन-उदल अपनी असमर्थता व्यक्त करते हैं क्योंकि उनका शरीर लहूलुहान था । मलखानसिंह उनके पौरुष की याद दिलाते हुए उन्हें प्रबोधित करते हैं । यथा :-

बोले मलिखे तब उदल ते, भैया सुरति[3] करो मनमाहिं ।
हमको ब्याहन गै पथरीगढ़, हम जब परे दहक में जाय ।
तुम जब पहुँचे ते दाहक पे, हमकों तहाँ पुकारो जाय ।
सुरेते निकसे हम ऊबे ते, सो सुधि करौ लहुरवा भाय ।
बाना राखो रजपूती को, क्या बल घटो तुम्हारो आज ।[4]

मलखान की ओजस्वी वाणी सुनकर उदल का पौरुष जाग्रत होता है । वह अपनी कुलदेवी का स्मरण करके, उछल कर बाहर आ जाता है । मलखान उदल को गले से लगा लेता है । ब्रह्मानंद भी उदल का आलिंगन करके उन्हें अपने सीने से लगा लेते हैं । लाखन भी बाहर

---

[1] गहरी खाई अर्थात बहुत ही गहरा गड्ढा.
[2] असली बड़ा आल्हखण्ड : पं. सीताराम जी, पृ.सं. 407.
[3] स्मरण करना, याद करना, ध्यान करना ।
[4] लाखन का ब्याह : श्री भगवती प्रसाद, पृ.सं. 60.

निकल आते हैं । लाखन और उदल को तंबुओं में भेज दिया जाता है जहाँ उनका उपचार या चिकित्सा की जाती है ।

अब मलखान पूर्ण वेग के साथ शत्रु-सेना पर आक्रमण कर देते हैं । उत्तर दिशा से वीर देवा, पूरब से ब्रह्मानंद, पश्चिम से ताल्हन सैयद तथा दक्षिण से स्वयं सिरसा-नरेश । कुछ ही घंटों के संग्राम के बाद बूँदी की सेनाओं की घेराबंदी करली जाती है । महोबा-वीरों की भीषण मारों से बूँदी-सेना में खलबली मच जाती है । शत्रु-सेना के अधिकांश योद्धा कालकवलित हो जाते हैं ।

शेष हुए सैनिक अपने हथियार छोड़कर भागने लगते हैं । बूँदी सेना का मोर्चा हट जाता है । ब्रह्मानंद मोतीसिंह के मोर्चे पर जाकर युद्ध करते हैं और कुछ ही समय में वे उसे बंदी बना लेते हैं । जवाहरसिंह क्रोधित होकर मलखान पर टूट पड़ता है । दोनों का आमना-सामना होता है, दोनों ही अपने अचूक अस्त्रों का प्रक्षेपण करते हैं । मलखान के रणकौशल के समक्ष जवाहरसिंह उन्नीस ही पड़ते हैं । अतः उन्हें घायल करके बंदी बनाकर कनवज के लश्कर में भेज दिया जाता है ।

अपने पुत्रों की पराजय तथा कैद का समाचार पाकर बूँदी-नरेश गंगाधर अत्यन्त व्याकुल हो जाता है । वे रंग महल में जाकर महारानी को सारा हाल सुनाते हैं और भाग्य को प्रबल मानते हुए मूर्छित-से हो जाते हैं । महारानी उन्हें धैर्य बंधाती है और बेटी के विवाह की संस्तुति प्रदान करती है । परंतु महाराज गंगाधर को अपनी पटरानी का सुझाव अच्छा नहीं लगता है । वे कहते हैं, कि-"क्षत्री-विवाह व्यापार नहीं है जो बिना युद्ध किए ही संपन्न हो जाए । बनाफरों के सहयोग से होने वाले विवाह को मैं जीते जी स्वीकृति नहीं दे सकता ।"

रानी विवश हो जाती है । राजा गंगाधर स्वयं मलखान की सेना का सामना करने का निश्चय करते हैं । वे अपनी सेना के अधिकारियों को युद्ध की तैयारी करने का आदेश देते हैं । राजा का आदेश पाकर बूँदी की बची हुई सेना पुनः युद्ध हेतु तैयार हो जाती है । बूँदी-नरेश स्वयं भव्य हाथी पर सवार होकर युद्ध-स्थल की ओर प्रस्थान करते हैं । युद्ध के नगाड़ों की आवाजे गूंजने लगती हैं ।

<u>गंगाधर की लड़ाई</u> :-

बूँदी-नरेश गंगाधर की बची हुई सेना मलखान के लश्कर का सामना करने के

लिए रणक्षेत्र में पहुँचकर मोर्चाबंदी कर देती है । अपने पुत्रों के बंदी बनाए जाने के कारण क्रुद्ध राजा अपना हाथी मलखान के सम्मुख ले जाते हैं । गंगाधर को अपने सम्मुख देखकर मलखान भी उनके प्रपंच पूर्ण व्यवहार से प्रभावित होकर आक्रोश-युक्त हो जाते हैं । वे अपने आक्रोश को व्यक्त करते हुए कहते हैं, कि—

बोले मलिखे तब गंगा ते, राजा सुनो हमारी बात ।
छलिकै बुलवाए लरिका तुम, औ ओमे में दिए डराय ।
तुमहिं मुनासिब यह नाहीं थी, जो छल करी हमारे साथ ।
अबहूँ तुम्हरो कछु बिगरो ना, सातों भाँवरि देउ डरवाय ।
ब्याह फिर बिन हम जै हैं ना, चाहैं प्राण रहै की जाय ।[1]

मलखान की बात सुनकर गंगाधर और अधिक उत्तेजित हो जाते हैं । उनके पास जादूविद्या की प्रबल शक्ति थी, अतः वे मलखान को लक्ष्य बनाकर जादू का प्रहार करते हैं । मलखान उनके प्रहार को नाकाम कर देते हैं और राजा को चेतावनी देते हुए कहते हैं कि—

बोले मलिखे गंगाधर ते, तुम सुनि लेव बुंदेलाराय ।
पुष्य नक्षत्र में मैं जन्मा हूँ, बारह परी बृहस्पति आय ।
तुम्हरे जादू की क्या गिनती, शंका हमहि काल की नाहिं ।[2]

राजा गंगाधर लज्जित हो जाते हैं । मलखान राजा की समकक्षता को दृष्टिगत रखते हुए, आल्हा से बूँदी-नरेश के साथ युद्ध करने का निवेदन करते हैं । अब आल्हा का पचशावत हाथी गंगाधर के सम्मुख आता है । आल्हा बूँदी-नरेश से कहते हैं, कि-"मेरे साथ युद्ध करने के लिए तैयार हो जाओ अथवा अपनी पुत्री का विवाह लाखन के साथ करने हेतु सहर्ष तैयार हो जाओ ।" एक वीर दूसरे वीर की अधीनता सामान्यतः स्वीकार नहीं करता है, वह तो अपने पराक्रम का परिचय देना चाहता है । वही होता है । दोनों ओर से एक दूसरे के ऊपर अस्त्र-प्रहार शुरू हो जाता है । कुछ अन्तराल के बाद राजा गंगाधर घायल हो जाते हैं और बंदी बना लिए जाते हैं । बंदी बूँदी-नरेश आल्हा की अधीनता स्वीकार कर लेते हैं । वे आल्हा-ऊदल तथा परमाल की वीरता की प्रशंसा करते हैं । अन्त में अपनी पुत्री कुसुमा का विवाह-प्रस्ताव स्वीकार कर लेते हैं । उनके दोनों पुत्रों- मोतीसिंह एवं जवाहरसिंह को रिहा कर दिया जाता है ।

---

[1] लाखन का ब्याह : अमोलसिंह, पृ.सं. 28,29.
[2] वही : पृ. 48.

विवाह की तैयारियाँ प्रारम्भ हो जाती हैं । पंडित बुलाया जाता है । शुभ मुहूर्त में लाखनराना अपने परिवार-जनों तथा कुछ प्रमुख वीरों के साथ रंगमहल में विवाह हेतु उपस्थित होते हैं । प्रपंची राजा गंगाधर पुनः कन्नौज-नरेश के साथ कपट-व्यवहार करता है । निहत्थे वीरों पर अचानक आक्रमण कर दिया जाता है । परन्तु लाखन के साथ आए हुए वीर उनके आक्रमण को नाकाम कर पुनः मोती और जवाहर को बंदी बना लेते हैं । मलखान, गंगाधर के छल-प्रपंची व्यवहार के लिए उन्हें पुनः धिक्कारते हैं और कुसुमा (गंगाधर की पुत्री) के कन्यादान के लिए बाध्य करते हैं । उपायहीन राजा, बाध्य होकर अपनी पुत्री का हाथ लाखन को समर्पित कर देता है । भाँवर आदि की रसम पूरी होती हैं, वेदमंत्रों का जाप होता है । परिचारकों, सेवादारों तथा पुरोहितों को वस्त्राभूषण उपहार में प्रदान किए जाते हैं । राजा जयचंद खुशी-खुशी दान-दक्षिणा प्रदान करते हैं । कुसुमा की विदाई के संदर्भ में राजा गंगाधर उनकी कुलरीति के अनुसार एक वर्ष बाद गौना करने का वादा करते हैं । वे अपनी राजसी गरिमा के अनुसार, धन-दौलत हाथी-घोड़े व कीमती हीरे-मोती जवाहारात आदि राजा-जयचंद को भेंट करके उनका उचित सम्मान करते हैं ।

कन्नौज-नरेश जयचंद की आज्ञा पाकर संपूर्ण लश्कर अब वापस आने की तैयारी करता है । तंबू उखाड़ दिए जाते हैं और कूच का डंका बजने लगता है । बारह दिन की मंजिल तय करने के उपरांत कन्नौज के सेनाएँ कालपी में यमुना नदी के किनारे पहुँचती हैं । ब्रह्मानंद तथा मलखान महोबा-गमन हेतु राजा जयचंद तथा आल्हा से आज्ञा मांगते है । राजा जयचंद कन्नौज चलने का आग्रह करते हैं परन्तु जब मलखान अत्यधिक अनुनय विनय करते हैं तो कन्नौज-नरेश विवश होकर उन्हें महोबा जाने की आज्ञा प्रदान कर देते हैं । इस प्रकार ब्रह्मानंद व मलखान का लश्कर महोबा के लिए तथा आल्हा एवं जयचंद लाखन के साथ कन्नौज के लिए रवाना हो जाते हैं ।

राजा जयचंद आल्हा के साथ कन्नौज पहुँचते हैं । विजयश्री एवं लाखन के ब्याह का समाचार पाकर कन्नौज की प्रजा की खुशी का ठिकाना नहीं रहता है । माता तिलका अन्य रानियों सहित थाल सजाकर आती हैं और योद्धाओं की आरती उतारती हैं । सभी लोकरीतियों व परंपराओं का निर्वाह किया जाता है । महलों में मंगलगीत गाए जाते हैं तथा दान-दक्षिणा एवं उपहार वितरित किए जाते हैं । इस प्रकार लाखन के विवाह की कथा संपन्न होती है ।

कन्नौज का किला, जो कि भग्नावशेष अवस्था में आज भी अपना इतिहास सुरक्षित रखे हुए है, कन्नौज-नरेशों की शौर्यगाथाएँ गाता है, ध्वस्त व भग्नावस्था में विद्यमान अस्त्र-शस्त्र उनकी वीरता के कौशल को चिह्नित करते हैं तथा मिट्टी की लालिमा उनके ओजस्वी रक्त का परिचय देती है ।

गाँजर का संग्राम :-

परमाल रासो में वर्णित कथाओं या वर्णनाओं के आधार पर गाँजर का संग्राम ऊदल की अद्भुत वीरता का परिचायक है । इस संग्राम का मुख्य उद्देश्य राजा जयचंद के राज्य की विभिन्न जागीरों की कर-वसूली था । कन्नौज राज्य शक्तिशाली एवं वैभव संपन्न था जहाँ राजा जयचंद व महाराज रतीभान राज्य करते थे । महाराज रतीभान संयोगिता स्वयंवर में वीरगति को प्राप्त हो गए थे । तत्कालीन राज्यों में दिल्ली एवं महोबा राज्य भी शक्तिशाली राज्य माने जाते थे ।

एक बार राजा जयचंद अपने दरबार के काम-काज में व्यस्त थे, उसी समय उनका मंत्री राजा से निवेदन करता है, कि-"महाराज । गाँजर क्षेत्र में लगभग बारह साल से कर वसूली का पैसा प्राप्त नहीं हुआ । उसका कुछ उपाय किया जाए । राज-कोष की अभिवृद्धि के लिए निरंतर कर वसूली आवश्यक है ।"‖1‖ अपने मंत्री की बात सुनकर राजा विचार-मग्न हो जाता है । चिंतन-मनन के पश्चात वह दरबार में कर-वसूली का बीड़ा रखवा कर एलान कर देता है, कि-"जो योद्धा इस पान के बीड़ा को गाँजर-विजय हेतु ग्रहण करेगा, उसे एक स्वर्ण-कलश उपहार स्वरूप प्रदान किया जाएगा । इसके अतिरिक्त गाँजर क्षेत्र की लूटपाट का धन भी विजेता का ही होगा ।" गाँजर क्षेत्र लखनऊ, बाराबंकी से गोरखपुर, कामरूप ‖कामाख्या-आसाम‖ तक फैला हुआ था । इसमें छोटी-छोटी रियासतें और जागीरें थी जो कन्नौज राज्य के अधीन थीं ।

दरबार में रखा हुआ संकल्प-बीड़ा कुम्हलाने लगा, कोई भी योद्धा गाँजर-विजय के लिए बीड़ा ग्रहण करने का साहस नहीं कर रहा था । क्षत्रियों की कायरता देखकर, दस्सराज-पुत्र उदल तमतमा उठते हैं और कलश के ऊपर रखे हुए पान के बीड़ा को ग्रहण कर लेते हैं । वह महाराज जयचंद को प्रणाम करके युद्ध की तैयारी का आदेश माँगते हैं । महाराज सहर्ष साशीष आज्ञा प्रदान करते हैं । अब ऊदल लाखन के पास जाते हैं

‖1‖ गाँजर की लड़ाई : क्षेमराज, पृ.सं. 15,18.

तथा सारे समाचार से अवगत कराते हैं । कुछ समय के अन्तराल में ऊदल व लाखन की सेनाएँ गांजर-संग्राम के लिए तैयार हो जाती हैं । ऊदल की सेना में शकुन-विचारक देवा, इन्दल तथा नैनागढ़ के राजकुमार जोगा-भोगा भी सम्मिलित हो जाते हैं । जोगा-भोगा आल्हा की पत्नी के भाई थे ।

गांजर संग्राम हेतु उद्यत कन्नौज-सेना का एक दृश्य दृष्टव्य है :-

फौज सजाय लियो कनवज की, भारी हुक्म कनौजी क्यार ।
हाथी चढ़ैया हाथि चढ़िगे, बाँकि घोड़न के असवार ।
पैदल सजिगे सब लश्कर के, अपने बाँधि-बाँधि हथियार ।
भूरी हथिनी सब सजवाई, तापर लाखन भये सवार ।
घोड़ा बेंदुला को सजवायो, ऊदल फाँदि भए असवार ।
इन्दल चढ़ि गए हंसामनि पै, देवा मनोरथा पर असवार ।
दस हजार हाथी सजवाए, सजि गए तीन लाख असवार ।
साले आल्हा के आए थे, जोगा-भोगा जिनको नाम ।
सोऊ त्यार भए गांजर को, अपने बाँधि लिए हथियार ।
घोड़ा पपीहा त्यार करायो, तापर जोगा भयो सवार ।
सब्जा घोड़ा को सजवायो, भोगा फाँदि भयो असवार ।[1]

इस प्रकार नगाड़ों की भीषण गर्जना के साथ कनवज का लश्कर गांजर के लिए प्रस्थान करता है ।

कन्नौज का लश्कर सर्वप्रथम बेरियागढ़ पर चढ़ाई करता है । बेरियागढ़ में राजा हरीसिंह तथा बीरसिंह राज्य करते थे । बेरियागढ़ के पांच कि.मी. पूर्व सेना पड़ाव डाल देती है । राजा बीरसिंह के पास संदेशवाहक ऊदल का पत्र लेकर जाता है । ऊदल पत्र में उल्लेख करते हैं कि-"बीरसिंह, आपने बारह वर्ष की कर-वसूली की कोई भी धनराशि कन्नौज रियासत के मालिक राजा जयचंद के पास नहीं भेजी, जबकि बेरियागढ़ कन्नौज रियासत का एक अंग है । अतः अविलम्ब संपूर्ण धनराशि प्रदान करो अन्यथा युद्ध के लिए तैयार हो जाओ ।"[2]

बेरियागढ़-नरेश हरीसिंह व बीरसिंह, ऊदल के पत्र को पढ़कर क्रुद्ध हो जाते हैं ।

---

[1] गांजर की लड़ाई : पृ.सं. 50, 51.
[2] वही : पृ.सं. 70.

वे उदल की चुनौती को सहर्ष स्वीकारते हुए, अपनी सेना को युद्ध हेतु तैयारी का आदेश दे देते हैं। इधर संदेशवाहक से प्राप्त सूचना के आधार पर लाखन व उदल की सेना मोर्चा-बंदी करके आक्रमण की राह देखने लगती हैं। बेरियागढ़ की सेनाएँ लाखन-उदल का सामना करने के लिए युद्धक्षेत्र में उपस्थित हो जाती हैं। हरीसिंह अपना हाथी उदल के सम्मुख लाकर उन्हें ललकारता हुआ कहता है, कि—

आगे बढ़िके हरीसिंह बोले, क्यहिं बेरियागढ़ घेरो आय।
क्यहिं की माता नाहर जायो, सो समुहें होय देव जवाब।§1§

उदल बाँकुरा उत्तर देता है कि—

हमरी माता नाहर जायो, हमने घेरो गांव तुम्हार।
हमहिं पठायो राजा जयचंद, औ उदल है नाम हमार।
बारह बरस क्यारि पैसा है, सो तुम दाम देब भरवाय।
नीके दे हौ नीके लै हौं, नाहीं कठिन करौ संग्राम।§2§

उदल की बात सुनकर हरीसिंह आग-बबूला हो जाते हैं और कहने लगते हैं, कि—

चढ़ि-चढ़ि आए राजा जयचंद, हम नहिं दीन्हीं एक छदाम।
धोखे रहियो न काहू के, सबके शीश लै हौं कटवाय।
आगे बढ़िहौ न कनवज लौं, तातें लौटि कन्नौजे जाऊ।§3§

गांजर-विजय हेतु बीड़ा उठाने वाला हठीला उदल कब मानने वाला था। वह मुँहतोड़ जवाब देता है। यथा :-

तापर जवाब दियो उदल ने, नाहीं जानो हाल तुम्हार।
अपन तुलरिया हम देखो ना, जो समुहे होय देय जवाब।
धोखे रहियो ना जयचंद के, कौड़ी-कौड़ी लै हौं भराय।
कूजी करिहौ जो हमते तुम, मारौं राज्य भंग होइ जाय।
हम हैं क्षत्री गढ़ महुबे के, राजा दस्सराज के लाल।
पैसा लिए बिना लौटें ना, चाहैं प्राण रहैं की जाएं।§4§

दोनों योद्धा अपने-अपने शौर्य एवं पराक्रम का बखान करते हुए, अपने संकल्प पर अटल रहते हैं, परिणाम स्वरूप आक्रोश पूर्ण वार्ता संग्राम का रूप धारण कर लेती है। दोनों

संदर्भित ग्रंथ : [1,2,3,4] असली बड़ा आल्हखण्ड : खेमराज, पृ.सं. 419, 420, 421.

ओर से तोपों के गोलों के धमाके होने लगते हैं । तोपों के गोलों की धरधराहट से आकाश फटने लगता है । सूर्य की प्रखर किरणें अंधकार में विलीन हो जाती हैं ।

हरीसिंह व बीरसिंह की लड़ाई :-

बेरियागढ़-नरेश हरीसिंह और बीरसिंह की चतुरंगिनी सेना बड़ी बहादुरी के साथ कन्नौज की सेना का सामना करती है । तोपों के गोलों से सेना के हाथी, घोड़े और ऊँट बुरी तरह घायल हो जाते हैं । तोपें निरंतर गोलों की बौछार करने के कारण ज्वालावर्ण हो जाती हैं । संपूर्ण सेनाओं में त्राहि-त्राहि मच जाती है ।

अब दोनों सेनाओं का समागम हो जाता है । लम्बी दूरी तक मार करने वाले हथियारों का प्रयोग बन्द करके योद्धा तलवार, भाला, बरछा आदि हथियारों का प्रयोग करने लगते हैं । ऊदल अपने सैनिकों का मनोबल बढ़ाते हुए प्रत्येक मोर्चे का निरीक्षण कर रहा था । रणबाँकुरे सिपाही जीजान लगाकर युद्ध कर रहे थे । ऊदल सैनिकों का हौंसला बुलंद करते हुए कहते हैं, कि—

सदा तुरैया ना बन फूले, यारो सदा न सावन होय ।
सदा न माता उर में धरि है, यारो जन्म न बारम्बार ।
जैसे पात गिरे तरुवर के, गिरिकै बहुरि न लागै डार ।
मानुष देही यह दुर्लभ है, आवै समय न बारंबार ।
पांव पिछारू तुम धरियो ना, रखियो धरम कनौजीक्यार ।
जीत के चलि हैं जो गांजर ते, दूनी तलब दै हों बढ़वाय ।[1]

कन्नौज की सेना का मनोबल बढ़ जाता है । वास्तविकता यह है कि किसी भी कार्य की सफलता कुशल नेतृत्व पर निर्भर करती है । ऊदल की सेना के सिपाहियों के भयंकर प्रहारों से बेरियागढ़ की सेना के पैर उखड़ जाते हैं । उनकी सेना में भगदड़ मच जाती है । लाखन दूसरी ओर शत्रु की सेना का संहार कर रहे थे ।

अपनी सेना को तितर-बितर देखकर हरीसिंह अपने हाथी को ऊदल के सम्मुख लाता है और युद्ध के लिए ललकारता है । ऊदल हरीसिंह की चेतावनी और चुनौती को स्वीकार करता हुआ, पहले उन्हें प्रहार करने का मौका देता है । हरीसिंह अपनी पूर्ण शक्ति के साथ ऊदल के ऊपर भाला का प्रहार करते हैं तथा बाद में तलवार से तीन

- -

[1] बृहत आल्हखण्ड : खेमराज प्रकाशन, बम्बई, पृ.सं. 417.

आक्रमण करते हैं, जिन्हें ऊदल नाकाम कर देता है । अब ऊदल की बारी आती है । वह अपने घोड़े को एड़ लगाता है, जिससे वह हरीसिंह के हाथी के हौदा पर चढ़ जाता है । ऊदल मौका पाकर हरीसिंह को बंदी बना लेता है ।

अपने भाई के बंदी बनाए जाने पर वीरसिंह क्रोधातुर हो जाता है और ऊदल के सम्मुख आकर उन्हें ललकारता है । दोनों वीर एक दूसरे पर टूट पड़ते हैं और द्वन्द-युद्ध होने लगता है । ऊदल के रण-कौशल की समकक्षता में वीरसिंह उन्नीस ही ठहरते हैं । ऊदल अपनी ढाल से वीरसिंह के हाथी के हौदे पर रखे हुए स्वर्ण-कलश गिरा देता है और तलवार से रेशमी रस्से काट देता है । वीरसिंह युद्धभूमि में गिर जाता है । वह एक कुशल कुश्तीबाज भी था, अतः वह ऊदल को मल्ल-युद्ध के लिए चुनौती देता है । इस प्रकार दोनों योद्धाओं में मल्ल-युद्ध प्रारम्भ हो जाता है । कुछ देर तक कुश्ती चलती है । अन्त में वीरसिंह झपट कर ऊदल को ऊपर उठा लेता है, और जमीन पर फेंकना चाहता है । जैसे ही वह ऊदल को उछालता है वैसे ही वह कुश्ती के दांव-पेंच के द्वारा तुरन्त पैंतरा बदल देता है । अब ऊदल वीरसिंह की छाती पर सवार हो जाता है और उसे बंदी बना लेता है ।

हरीसिंह एवं वीरसिंह के बन्दी बनाए जाने पर बेरियागढ़ की सेनाएं हथियार डाल देती हैं । कन्नौज की सेना उनकी घेराबंदी कर लेती है । बेरियागढ़ में लूटपाट मच जाती है, उनका शाही खजाना लूट लिया जाता है । शाही खजाने की संपूर्ण धनराशि लाखनसिंह को समर्पित करदी जाती है । अब हरीसिंह और वीरसिंह लाखन की अधीनता स्वीकार कर लेते हैं । कनवज के लश्कर में विजय के नगाड़े बजने लगते हैं ।

बेरियागढ़-विजय के उपरान्त गांजर-क्षेत्र के अन्य राज्यों पर आक्रमण करने की योजना पर विचार किया जाता है । लाखन और ऊदल के निर्देशानुसार संपूर्ण लश्कर विजयघोष करता हुआ, पट्टी रियासत की ओर अग्रसरित होता है ।

पट्टी के महाराजा सातनि की लड़ाई :-

बेरियागढ़ पर विजय प्राप्त करने के बाद ऊदल और लाखन अपने सैन्यबल के साथ पट्टीगढ़ पहुँचते हैं । पट्टी रियासत भी कन्नौज राज्य का एक अंग माना जाता था । पट्टीगढ़ की सीमा पर सेना पड़ाव डाल देती है और योद्धा विश्राम करने लगते

हैं । कनवज-नरेश लाखन भावी युद्ध हेतु उदल तथा देबा से परामर्श करने लगते हैं । राजनीति के अनुसार, उदल पट्टी के राजा सातनि को ज्वालवर्ण कर देता है । वह उदल व लाखन की सेनाओं का सामना करने के लिए सेनापतियों को सैन्य तैयारी का आदेश दे देता है । अपने राजा का आदेश पाकर पट्टीगढ़ की तीन लाख सिपाहियों की सेना, लाखन की सेना का मुकाबला करने के लिए रणक्षेत्र में उपस्थित हो जाती है । राजा सातनि भव्य हाथी पर सवार होकर उदल के सामने आ डटता है । और उन्हें युद्ध करने की चुनौती देता है । वह उदल से यह भी प्रश्न करता है, कि-"अचानक हमारा नगर क्यों घेर लिया है ? तुम्हारा क्या नाम है ?" उदल उन्हें समुचित उत्तर देता है कि-"मेरा नाम उदल है और मैं महोबा नगर का रहनेवाला हूँ । बारह वर्ष की कर-वसूली की धनराशि का कोई भी अंश कन्नौज-नरेश के पास नहीं भेजा गया जबकि पट्टी जागीर कन्नौज राज्य का एक अंग है । अतः आप तुरन्त ही कर की बकाया धनराशि का भुगतान करदो । रतीभान पुत्र लाखन भी मेरे साथ आए हुए हैं । तुम उनकी अधीनता स्वीकार करलो, अन्यथा युद्ध के लिए तैयार हो जाओ ।"(1)

उदल की गर्वीली वाणी सुनकर सातनि अत्यन्त क्रोधित हो जाता है और तोपचियों को तोपों में अग्नि लगाने का आदेश करता है । तोपें धूँ-धूँ की आवाज करती हुई आग उगलने लगती हैं । तोपों के गोलों से आकाश फटने लगता है । घोड़े, हाथियों तथा घायलों की चीत्कार से संपूर्ण ब्रह्मांड गूँज उठता है । आकाश धूम्राच्छादित हो जाता है । युद्ध करते-करते दोनों सेनाओं का संगम हो जाता है । अब लम्बे हथियारों की मार समाप्त हो जाती है और तेगा-तलवारों की खटखटाहट सुनाई देने लगती है ।

राजा सातनि अपनी सेना के विभिन्न मोर्चों पर घूम-घूमकर सैनिकों का मनोबल बढ़ा रहा था । पट्टी की सेनाएँ जीजान लगाकर अपने राजा के लिए युद्ध कर रही थीं । राजा सातनि सैनिकों का मनोबल बढ़ाते हुए कहते हैं, कि—

भाग न जैयो कोऊ मोहरा से, यारो रखियो धर्म हमार ।
नमक हमारो तुम खायो है, सो हाड़न में गयो समाय ।
आज अखाड़े(2) में बरनी है, सन्मुख लड़ो शत्रु के साथ ।(3)

---

(1) बुन्देलखंड का मध्ययुगीन काव्य : एक ऐतिहासिक अनुशीलन (अप्रकाशित) - डॉ. नर्मदा प्रसाद गुप्त. (2) रणभूमि, युद्ध-स्थल. (3) बुंदेली लोकगाथा काव्य आल्हा : डॉ. बलभद्र तिवारी, पृ.सं. 62.

सातनि की सेनाएँ और कुशल नेतृत्व के समक्ष ऊदल की सेना के पैर उखड़ने लगते हैं। उनका मोर्चा हट जाता है। ऊदल का घोड़ा बेंदुला पीछे हट जाता है। बेंदुला बुरी तरह घायल हो जाता है। युद्ध में अपनी पराजय से शंकित होकर ऊदल, आल्हा से प्रार्थना करते हुए कहते हैं, कि–"दादा, पट्टी–नरेश का सामना करना असाधारण है, आप ही इनका सामना करें। राजा सातनि आपके समकक्षी हैं।"

ऊदल का निवेदन स्वीकार करते हुए, आल्हा अपने हाथी को आगे बढ़ाते हैं और सातनि के सम्मुख पहुँचकर उसे सावधान करते हैं। उनकी चुनौती को स्वीकारता हुआ पट्टी–नरेश लाल कमान ग्रहण कर लेता है। वह आल्हा को निशाना बनाकर बाण चला देता है। हाथी पचशावत पीछे हट जाता है और सातनि का प्रहार नाकाम हो जाता है। पट्टी–नरेश आल्हा को वापस लौट जाने की सलाह देता है और पुनः जंग के लिए ललकारता है।

आल्हा बड़ी धीरता और वीरता के साथ उत्तर देते हैं, कि–"मैं कोई साधारण क्षत्री नहीं हूँ। मुझे सारा संसार जानता है। मुझे अपने प्राणों की परवाह नहीं है। कर–वसूल किए बिना मैं वापस नहीं जाऊँगा।" ऐसा कहते हुए आल्हा अपने हाथी की सूँड में लोहे की साँकल पकड़ा देते हैं। लोहे की साँकल के प्रहारों से पचशावत शत्रु की सेना को तितर–बितर कर देता है। सारी सेना में खलबली मच जाती है। जब पचशावत, महाराज सातनि के हाथी पर साँकल का प्रहार करता है तो वह जमीन पर गिर जाते हैं, परन्तु तुरन्त ही घोड़े पर सवार होकर पुनः युद्ध करने लगते हैं। इस बार नैनागढ़ के राजकुमार जोगा–भोगा उनका सामना करते हैं।

जोगा–भोगा बड़ी धीरता के साथ पट्टी–नरेश का सामना करते हैं। दोनों सेनाओं के बीच पुनः भयंकर युद्ध होता है। जोगा–भोगा सातनि की सेना को आतंकित कर देते हैं। युद्ध में कठिन मार करते–करते उनकी तलवार टूट जाती है। मौका पाकर सातनि उनके ऊपर तेगा से प्रहार कर देता है और दोनों भाई सातनि की तलवार की भेंट हो जाते हैं। उनके घोड़े [पपीहा और सब्जा] बुरी तरह घायल हो जाते हैं।

युद्ध का ऐसा भयानक दृश्य देखकर आल्हा–पुत्र इंदल पट्टी–नरेश की सेना पर टूट पड़ता है। भीषण मारकाट करता हुआ इन्दल सातनि के सामने जाकर उन्हें ललकारता है। दोनों में द्वन्द्व–युद्ध आरम्भ हो जाता है। इन्दल, महाराज सातनि के

सभी प्रहारों को नाकाम कर देता है परन्तु उसके तेगा के वार से पदटी-नरेश घायल होकर पृथ्वी पर गिर जाते हैं । अवसर पाकर वह राजा सातनि को तुरन्त बंदी बना लेता है ।

अपने राजा के बन्दी बनाए जाने पर पदटी की सेनाएँ हथियार डालकर आत्म-समर्पण कर देती हैं । इस प्रकार विजयश्री कन्नौज की सेना के हाथ लगती है, उनकी सेना में विजय के नगाड़े बजने लगते हैं । पदटी जागीर का शाही खजाना लूट लिया जाता है और इस प्रकार इस क्षेत्र पर पुनः महाराज जयचंद का अधिकार हो जाता है । जोगा-भोगा की वीरगति से लाखन, आल्हा, ऊदल एवं इन्दल आदि बहुत दुखी होते हैं ।

उत्साह और आत्मविश्वास की भावनाएँ व्यक्ति को हर बाधा पर विजयश्री प्राप्त करने में सहायक होती हैं । कन्नौज-सेना के समस्त वीर उत्साही और आत्मविश्वासी थे, उनका एक ही लक्ष्य था, कि गांजर क्षेत्र पर पुनः कन्नौज राज्य का अधिकार हो जाए । अतः लाखन और ऊदल के नेतृत्व में सेनाएँ अपने गंतव्य की ओर अग्रसर होती हैं ।

कामरुप के राजा कमलापति का संग्राम :-

परमाल रासो की कथा-श्रृंखला में गांजर संग्राम लम्बी अवधि तक चलने वाला संग्राम माना गया है । इस संग्राम में गांजर क्षेत्र की विभिन्न लड़ाइयों का वर्णन मिलता है ।

पदटी क्षेत्र के महाराजा सातनि को पराजित करके कनवज का लश्कर कामरुप {कामाख्या} राज्य की ओर प्रस्थान करता है, वहां राजा कमलापति राज्य करते थे । कामरुप की सीमा पर पहुँचकर लाखन-ऊदल की सेनाएँ डेरा डाल देती हैं । ऊदल देवा को बुलाकर भावी युद्ध की योजना बनाते हैं । राजनीति के अनुसार राजा कमलापति को संदेशवाहक द्वारा कन्नौज की सेनाओं के आगमन की सूचना दी जाती है । उन्हें यह भी आगाह कराया जाता है, कि कामरुप राज्य कन्नौज-नरेश जयचंद के अधीन है इसलिए बारह वर्ष की कर वसूली की संपूर्ण धनराशि ससम्मान कन्नौज के राजकोष में जमा करादें, अन्यथा युद्ध के लिए तैयार हो जाएं ।

उदल का सन्देश सुनकर, कामरूप-नरेश कमलापति क्षत्रिय जन्य आक्रोश से युक्त हो जाता है । एक क्षत्री बिना युद्ध किए शत्रु की अधीनता कैसे स्वीकार कर सकता है । आदिकाल में क्षत्रियों का मुख्य कार्य ही युद्ध करना माना जाता था, अस्तु तलवार का जौहर दिखाए बिना राजा कमलापति द्वारा उदल की अधीनता स्वीकार करना, उनकी कायरता का परिचायक थी । अतः अपने क्षात्र धर्म का निर्वाह करते हुए राजा कमलापति सेनापतिओं को युद्ध की तैयारी करने का आदेश देते हैं । कुछ ही समय के अन्तराल में कामरूप की सेनाएँ कन्नौज-नरेश लाखन की सेना का सामना करने के लिए रणभूमि में उपस्थित हो जाती है । महाराज कमलापति भी राजसी वैभव के साथ युद्ध की वेशभूषा धारण करते हैं । उनकी वैभवपूर्ण साज-सज्जा {युद्ध हेतु} एवं आध्यात्मिक प्रवृत्ति के संदर्भ में कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं । यथा :-

करी तैयारी कमलापति ने, पहुँचे रंग महल में जाए ।
घट भरवायो गंगाजल को, तासे तुरत भयो अस्नान ।
डारि आसनी रेशम वाली, तापर बैठि गए अरगाय ।
चंदन रगरो मलियागिरि को, स्वरन कटोरा धरो उतार ।
करिके पूजन श्री गणपति को, ले बजरंगबली को नाम ।
दै कै चंदन भुजदंडन पे, औ माथे में लियो लगाय ।
लंग बांधिके रेशम वाली, धोती पहिरि मोतियन क्यार ।
पहिरि पाजामा मितरूवाला, जागाँ पहरि बदामी क्यार ।
ताके ऊपर बखतर पहिरो, जामे तेग नाहिं अनियाय ।
पाग बैजनी सिर पर बांधी, शोभा कछु कही ना जाय ।
बारह छुरियां कम्मर बांधी, राजा दुई बांधी तलवारि ।
अगल-बगल दुई-दुई पिस्तोलें, दहिने सिंहिन मूठि कटार ।
भाला लीन्हों नाग दौनि को, बायें भुजा गैंड की ढाल ।
कलगी लागी मोतीचूर की, माला चमकि-चमकि रहि जाय ।
सजिके कमलापति ठाड़े भये, अपनो हाथी लियो मंगाय ।
गद्दा डारि दियो मखमल को, रेशम रस्सा दियो कसाय ।
धरि अम्बारी सोने वाली, चमकें कलश सोबरन क्यार ।
हौदा धरि दओ है चुम्बक को, जामें सेल बेलौंचा खाय ।

हाथी ऊपर रेशम झालर, चन्दन सिढ़ियाँ दियो लगाय ।
तापर चढ़ि कै राजा कमलापति, हौदा बीच पहुचिगे जाय ।§1§

इस प्रकार इन्द्र देवता के समान सुशोभित राजा कमलापति रणखेत में आ पहुँचते हैं । वह ऊदल के सम्मुख उपस्थित होकर उन्हें चुनौती देते हैं । ऊदल भी युद्ध धर्म के अनुसार उनकी चुनौती स्वीकार करता है । इस प्रकार चुनौती-पूर्ण वार्ता युद्ध का रूप धारण कर लेती है । दोनों ओर की तोपों से गोले छूटने लगते हैं । असंख्य हाथी-घोड़ों और सैनिकों की जानें जाती हैं । युद्ध करते-करते दोनों सेनाओं में संगम हो जाता है । अब तोपों की गोलाबारी बन्द हो जाती है तथा सेगा, तलवार, कटार, बरछे व भाले अपनी करामात दिखाने लगते हैं ।

दोनों पक्षों की सेनाएँ अपूर्व रणकुशलता व वीरता का परिचय देती हैं । अपने-अपने आन की रक्षा के लिए सैनिक जान हथेली पर रखकर युद्ध कर रहे थे । कई दिन तक युद्ध चलने के बाद कामरूप की सेनाओं का उत्साह क्षीर्ण होने लगता है, उनके पैर उखड़ जाते हैं और वे अपना मोर्चा हटा लेती हैं । अपनी सेनाओं को हतोत्साहित देखकर, कमलापति अपना हाथी ऊदल के सामने लाकर खड़ा कर देते हैं और उन्हें ललकारते हुए कहते हैं, कि-"ऊदल तुम महोबा वापस लौट जाओ । व्यर्थ में क्यों प्राण गंवाना चाहते हो । अभीतक तुम्हारा वीरों से सामना नहीं हुआ है । माड़ौं की विजय से तुम्हारा हौसला बढ़ गया है ।"§2§ प्रतिद्वन्द्वी की चुनौती और चेतावनी भरी वाणी सुनकर ऊदल अपने भाव व्यक्त करते हुए कहता है, कि--

यह सुनि ऊदल बोलन लागे, कमलापति को दियो जवाब ।
हाल तुम्हारो ना जानो है, ताते बातें करत बनाय ।
दतिया मारि उड़ीसा मारो, बाजी सेत बंद लों टाप ।
मोहरा मारो हम पिरथी को, औ ब्रह्मा को करो ब्याह ।
बावनगढ़ के राजा जीते, जीते बड़े-बड़े सरदार ।
अपना दुसरिया हम राखो ना, जो समुहें होय देय जवाब ।
दाम चुकाय देव जल्दी तुम, तौ हम लौटि कन्नौजे जाएं ।
दाम लिये बिन हम जैहैं ना, चाहै कोटिन करो उपाय ।
नीके दै हौ नीकें लै हैं, नाहीं कैद लै हौं करवाय ।§3§

---

§1§ गांजर संग्राम: कुँवर अमोलसिंह§श्रीकृष्ण पुस्तकालय प्रका॰कानपुर§, पृ॰ 42, 43, 44.
§2§, §3§ वही : पृ॰सं॰ 55 एवं 58.

ऊदल की गर्वीली वाणी सुनकर राजा कमलापति क्रोधित हो जाता है और उनसे अपना जौहर दिखाने का प्रस्ताव करता है, परन्तु ऊदल पहले वार नहीं करना चाहता है। वह कामरूप-नरेश से रणकौशल दिखाने का आग्रह करता है। राजा कमलापति भाले का प्रहार करते हैं परन्तु ऊदल उसे अपनी कुशलता से नाकाम कर देता है। राजा क्रोधित होकर पूर्ण वेग से तलवार का झड़ाका करते हैं। ऊदल अपनी ढाल अड़ा देता है जिससे ढाल तो फट जाती है परन्तु तलवार का वार खाली जाता है। इस प्रकार भवानी की दया ऊदल पर मेहरबान होती है। अब ऊदल की बारी आती है। वह अपने घोड़े को एड़ लगाता है जिससे वह आसमान में उड़ जाता है और कमलापति के हाथी के हौदा में झपाटा मारता है। राजा चित्तभ्रमित हो जाते हैं, अवसर पाकर ऊदल उन्हें बंदी बना लेता है। कमलापति के बन्दी बनाए जाने पर उनकी सेना हथियार डाल देती है। इस प्रकार कामरूप राज्य पर पुनः कन्नौज-नरेश का अधिकार हो जाता है। कामरूप राज्य के राजकोष पर अपना अधिकार करके, लाखन कन्नौज का ध्वज फहरा देते हैं।

परमाल रासो पर आधारित विभिन्न आल्हखण्डों [आल्हा] में गांजर का संग्राम लेखक के व्यक्तित्व और बुद्धि-कौशल के कारण संक्षिप्त या विस्तृत रूप में वर्णित है परन्तु सब का मूलभाव सामान्यतः समान है। परमाल रासो में वर्णित वर्णनाओं से ऐसा ज्ञात होता है कि गांजर संग्राम लगभग चार माह तक हुआ था। यथा :-

तीन महिना तेरह दिन तक, छूटो न तंग बेंदुला क्यार।
बड़ो सूरमा बग ऊदल है, जाकी जगजाहिर तलवारि। [1]

कामरूप या कामाख्या-विजय के उपरान्त सेनाएं कुछ दिनों तक विश्राम करती हैं। कामरूप राज-खजाने का धन कन्नौज भेज दिया जाता है। मेधावी देवा के परामर्शानुसार भावी लक्ष्य बंगाल प्रांत बनाया जाता है। अतः संपूर्ण लश्कर बंगाल की ओर प्रस्थान करता है।

बंगाले के राजा गोरखा का संग्राम :-

परमाल रासो की वर्णनाओं में गांजर की लड़ाइयों की श्रृंखला में बंगाले के राजा गोरखा की लड़ाई का अपना एक विशेष महत्त्व है। कामरूप के राजा कमलापति

- -

[1] आल्हखंड : खेमराज कृत, पृ.सं. 455.

को पराजित करने के बाद लाखन का लश्कर बंगाल की ओर प्रस्थान करता है। बंगाल प्रांत में राजा गोरखा राज्य करता था। बंगाल प्रांत भी राजा जयचंद के अधीनस्थ माना जाता था। बंगाल की सीमा पर लाखन व उदल की सेनाएँ तंबू लगाकर, आगामी युद्ध हेतु तैयारी करने लगती हैं। युद्ध नीति के अनुरूप राजा गोरखा के पास लाखन का समझौता-प्रस्ताव भेजा जाता है, जिसमें बारह वर्ष की कर वसूली मुख्य प्रश्न था। यह हमारी संस्कृति की विशेषता रही है कि हम शत्रु के साथ भी उदारतावादी दृष्टिकोण अपनाना चाहते हैं। हम अपने अधिकार शान्ति एवं अहिंसा के द्वारा प्राप्त करना चाहते हैं। मैत्रीभाव एवं आपसी समझौता के माध्यम से समस्या का निराकरण करना चाहते हैं।

राजा गोरखा लाखन के प्रस्ताव को अस्वीकार कर देता है। मानवीय प्रकृति के अनुसार हर प्राणी आज़ाद रहना चाहता है। राजा गोरखा भी प्राणीजन्य स्वभाव के कारण अपना अलग अस्तित्व बनाकर जीना चाहते थे। कन्नौज की विशाल सेना का समाचार पाकर वे भयभीत तो हुए परन्तु राज्यमोह के कारण उन्होंने युद्ध करना ही उचित समझा। इसे क्षत्रिय धर्म का पालन भी कहा जा सकता है।

बंगाल-नरेश अपने स्वतंत्र व्यक्तित्व की मर्यादा तथा अपनी क्षत्रीय अस्मिता के लिए सैन्य तैयारी का आदेश देता है। कुछ ही समय में बंगाल की सेनाएँ कन्नौज-नरेश की कटीली सेना का मुकाबला करने के लिए युद्धभूमि में उपस्थित हो जाती हैं। उधर शत्रु की सेना को देखकर उदल अपनी सेना को सतर्क कर देता है। सेनापतिओं की आज्ञा पाकर मोर्चाबंदी कर ली जाती है। राजा गोरखा अपने हाथी को लाखन के सम्मुख ले जाकर, उनसे प्रश्न करता है, कि-"कौन-सा ऐसा योद्धा है जिसने अकारण नगर व किले की घेरेबंदी कर दी है?" राजा की बात सुनकर लाखन उत्तर देते हैं, कि-"मेरा नाम लाखन है। मैं राजा जयचंद का भतीजा तथा रतीभान का पुत्र हूँ। यह क्षेत्र कन्नौज राज्य का एक अंग है जो पूर्णतः महाराज जयचंद के अधीन है। आपने बारह वर्ष की मालगुजारी का एक पैसा भी नहीं दिया है। यह अन्याय है। इसलिए संपूर्ण धनराशि का भुगतान कर दो अथवा युद्ध के लिए तैयार हो जाओ।"

वह लाखन की बात सुनकर क्रोधित हो जाता है और शत्रु को ललकारता हुआ अपनी सेना को युद्ध का आदेश दे देता है। कन्नौज की ओर से उदल उसका सामना

करते हैं । दोनों सेनाओं में भयंकर युद्ध होता है । दोनों ओर के हजारों योद्धा धरती-माता की गोद में चिरनिद्रा में सो जाते हैं । तेगों की खटखटाहट तथा तलवारों की झनझनाहट से रणस्थल गुंजायमान हो जाता है । दोनों सेनाओं के सेनापति अपने-अपने सैनिकों का हौसला बुलन्द कर रहे थे । ऊदल के रण-कौशल एवं वीरता के कारण कन्नौज की सेना का साहस एवं मनोबल निरंतर बढ़ता जा रहा था । सिपाही जान हथेली पर रखकर युद्ध कर रहे थे । कनवज की सेनाओं के रण-चातुर्य एवं पराक्रम के समक्ष गोरखा की सेनाओं का उत्साह ठन्डा पड़ने लगता है और उनके पैर उखड़ जाते हैं ।

अपनी सेना का ऐसा क्षय देखकर, राजा गोरखा अपना हाथी ऊदल के सामने लाकर उन्हें द्वन्द्व-युद्ध के लिए ललकारता है । वह ऊदल पर गुर्ज[1] का प्रहार करता है । ऊदल का घोड़ा बेंदुला ऊपर उड़ जाता है जिससे गुर्ज जमीन में धुस जाती है और वह बच जाता है । राजा गोरखा कई अस्त्रों का प्रहार करता है परन्तु दैवीय कृपा के कारण ऊदल उन्हें नाकाम कर देता है । अब ऊदल अपने घोड़े को एड़ लगाता है । वह सीधा राजा गोरखा के हाथी के हौदा पर झपट्टा मारता है । ऊदल तलवार के प्रहार से हौदा की अम्बारी[2] काट देते हैं जिससे राजा जमीन पर गिर जाता है । अवसर पाकर वे उसे बंदी बना लेते हैं । राजा के बन्दी बनाए जाने से सेना आत्म-समर्पण कर देती है । ऊदल की सेना में विजय के नगाड़े बजने लगते हैं । बन्दी राजा को लश्कर में भेज दिया जाता है और राजकोष पर कन्नौज-नरेश का अधिकार हो जाता है । इस प्रकार बंगाल क्षेत्र पुनः कन्नौज के अधीन हो जाता है ।

कटक, जिन्सी, गोरखपुर, पटना आदि राजाओं की लड़ाई :-

आल्हखण्ड या परमाल रासो में गांजर की लड़ाई सबसे लम्बे समय तक चलने वाली लड़ाई मानी जाती है । यह संग्राम ऊदल की अदभुत वीरता का प्रतीक है ।

बंगाले के राजा गोरखा को पराजित करने के बाद कन्नौज का लश्कर अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान करता है और कटक क्षेत्र के राजा मुरलीसिंह एवं मनोहरसिंह पर आक्रमण करता है । ऊदल की सेना उनके किले की घेराबंदी कर लेती है । मुरलीसिंह एवं मनोहरसिंह बड़ी धीरता के साथ उनकी सेना का सामना करते हैं । उन्हें भी अपने

---

[1] गुर्ज : भाला के समान नुकीला हथियार जो फेंक कर प्रयुक्त किया जाता है ।
[2] अम्बारी : युद्ध के हाथियों के ऊपर बैठने का सुरक्षित स्थान, जहां पर योद्धा या राजा बैठकर युद्ध करते थे ।

मुँह की खाना पड़ती है और बन्दी बना लिए जाते हैं । अब कनवज की सेनाएँ जिन्सी के महाराज जगमनिसिंह पर चढ़ाई करती हैं । जिंसी-नरेश जगमनिसिंह शत्रु की सेना का सामना करते हैं । उदल से राजा जगमनिसिंह का आक्रोश-पूर्ण वार्तालाप होता है । दोनों वीर एक दूसरे की चुनौती को स्वीकार करते हुए टूट पड़ते हैं । अपनी-अपनी आन के लिए पूरी शक्ति लगाकर युद्ध होता है । जिन्सी-सेना के बहुत से सिपाही शहीद हो जाते हैं । अपनी सेना का क्षय देखकर जगमनिसिंह उदल को द्वन्द्व-युद्ध हेतु ललकारता है । उदल का रण-कौशल जगमनि को हतोत्साहित कर देता है । उदल अपनी कुलदेवी मनियादेव का स्मरण करके, शत्रु पर प्रहार करते है जिससे राजा जगमनि घायल हो जाता है और बंदी बना लिया जाता है । इस प्रकार जिंसी क्षेत्र भी राठौर-नरेश जयचंद के अधीन हो जाता है तथा साही खजाने पर उनका अधिकार हो जाता है ।

जिन्सीगढ़ पर अपने विजय ध्वज को फहराती हुई लाखन-उदल की सेनाएं ससनीगढ़ की ओर प्रस्थान करती हैं । ससनीगढ़ में चिंतासिंह राज्य करता है । अचानक ससनीगढ़ की घेराबन्दी कर ली जाती है । चिंता ठाकुर एवं उदल के बीच घोर युद्ध होता है । अन्त में यहां भी उदल को विजय प्राप्त होती है । राजा बंदी बना लिया जाता है ।

अपनी निरंतर विजय के कारण उत्साहित कन्नौज की सेनाएँ गोरखपुर की ओर प्रस्थान करती हैं । वहां सूरजसिंह नाम का राजा राज्य करता था । उदल उसके पास अपना कर-वसूली का प्रस्ताव भेजता है जिसे वह अस्वीकार कर देता है । वह अपने सैन्यबल के साथ उदल का मुकाबला करने के लिए उद्यत हो जाता है । युद्धोपरान्त वह भी बंदी बना लिया जाता है । गोरखपुर के बाद पटना के राजा पूरनसिंह एवं काशी-नरेश हंसामनि भी गांजर-संग्राम में लाखन-उदल द्वारा बन्दी बना लिए जाते हैं एवं उनका माल खजाना लूट लिया जाता है । इस प्रकार तीन महिना एवं तेरह दिन के कठिन संग्राम के बाद संपूर्ण गांजर क्षेत्र पर कन्नौज का आधिपत्य स्थापित हो जाता है । गांजर के बारह राजा बन्दी बना लिए जाते हैं ।

कुँवर अमोलसिंह द्वारा लिखित एवं श्रीकृष्ण पुस्तकालय प्रकाशन, कानपुर द्वारा प्रकाशित "गांजर की लड़ाई" नामक पुस्तक के आधार पर गांजर-विजय का संक्षिप्त वर्णन इस प्रकार है :-

तीन महिना तेरह दिन तक, गांजर कठिन चली तलवारि ।
डेढ़ लाख क्षत्री कनवज के, जूझे गाँजर के मैदान ।
बारह राजा गांजर वाले, जीतो तिनहिं उदयसिंहराय ।
कैदी करिके सब राजन को, जीत को डंका दियो बजाय ।
पगिया बदली लाखंन राना, औ उदल से कही सुनाय ।
जा दिन जैहो तुम महुबे को, हमहूँ चलि हैं संग तुम्हार ।
कूंच करायो सब लश्कर को, औ कनवज की पकरी राह ।§1§

समस्त माल-खजाना तथा गांजर के बारह राजाओं को बन्दी बनाकर उदल-लाखन कन्नौज के लिए वापस प्रस्थान करते हैं । उदल के अद्भुत पराक्रम से लाखनराना विमुग्ध हो जाते हैं । वे उदल के अपूर्व सहयोग से ऋणी हो जाते हैं । लाखन के मन में अपना पराक्रम दिखाने का भाव अवशेष रह जाता है, इसलिए उदल से अपनी पगड़ी बदलकर प्रतिज्ञा करते है, कि-"मित्र, जहां तुम्हारा पसीना गिरेगा, वहां खून की नदी बहा दूँगा ।" वह उदल से यह भी आश्वासन ले लेते हैं कि जब वे महोबा वापस जाएंगे तो वह भी उनके साथ जाएंगे । अपने मित्र के हृदय में अगाध प्रेम देखकर उदल कृतकृत्य हो जाते हैं । दस दिन की यात्रा के बाद विजयी सेनाएँ कन्नौज पहुँचती हैं ।

गांजर-विजय का समाचार पाकर महाराज जयचंद की खुशी का ठिकाना नहीं रहता है, संपूर्ण राज्य में प्रसन्नता की लहर दौड़ जाती है । लाखंन और उदल महलों में जाकर माता तिलका को प्रणाम करते हैं । माता सोने के थाल लेकर आती है और दोनों वीरों की आरती उतारती है । राजा जयचंद की अन्य रानियों से मिलकर वे राजदरबार में जाते हैं वहां महाराज को प्रणाम करते हैं । कन्नौज-नरेश उन्हें गले से लगा लेते हैं और आशीर्वाद देते हैं । समस्त सभासद लाखन की विजय पर बधाइयाँ देते हैं तथा लाखंन-उदल के पराक्रम की प्रशंसा करते हैं ।

उदल गांजर-विजय से प्राप्त संपूर्ण धन, माल-खजाना आदि महाराज जयचंद के चरणों में समर्पित करते हैं । संपूर्ण धनराशि कन्नौज के राजकोष में जमा कर दी जाती है । गांजर-प्रदेश के बन्दी बनाए हुए बारह राजा दरबार में उपस्थित किए जाते हैं ।

---

§1§ गांजर की लड़ाई : कुँवर अमोलसिंह, पृ.सं. 29, 30.
अन्य द्रष्टव्य ग्रंथ — आल्हखण्ड : पं. भोलानाथ, पृ.सं. 448.

वे सभी पुनः महाराज जयचंद की अधीनता स्वीकार कर लेते हैं। कृपालु राजा जयचंद उन्हें रिहा कर देते हैं। महाराज द्वारा उदल की वीरता एवं पराक्रम की भूरि-भूरि प्रशंसा की जाती है। वे उदल की प्रशंसा करते हुए कहते हैं, कि—

बोले जयचंद तब उदल से, धनि-धनि जस्सराज के लाल।
कठिन काम हमरो तुम कीन्हों, अब तुम जाय करो विश्राम।
तुम सब लायक हो महुबे के, रानी देव कुंवरि के लाल।
ऐसे योद्धा जिस महुबे में, काहे न राज करे परमाल।
यह कह राजा कनवज वाले, उदल कंठ लियो लिपटाय।
भुजा पूज दई बध उदल की, मस्तक चंदन दियो लगाय।॥1॥

उदल महाराज को शीश झुकाकर प्रणाम करते हैं और अपने महलों में चले जाते हैं। महलों में माता देवल उनकी प्रतीक्षा कर रहीं थीं, वे अपने विजयी पुत्र की आरती उतारती हैं और गले से लगा लेती हैं। उदल माता को प्रणाम करके आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। कठिन परिश्रम एवं दीर्घ अन्तराल तक युद्ध-रत सैनिक आमोद-प्रमोद एवं विश्राम करते हैं। राजा जयचंद द्वारा सैनिकों एवं वीर योद्धाओं को वस्त्र-आभूषण उपहार स्वरूप प्रदान किए जाते हैं, शहीद सैनिकों के आश्रितों को राजकोष से विशेष सहायता की घोषणा की जाती है। महाराज जयचंद लाखन-उदल के अद्भुत पराक्रम की कहानी सुनकर निहाल हो जाते हैं। लाखनराना भी उदल की वीरता से कृतार्थ होकर, अभिन्न मित्रता का संकल्प लेते हैं। लाखन अपने पराक्रम का परिचय नदी-वेतवा के संग्राम में देते हैं। प्रस्तावित ग्रंथ में लाखन की वीरता आदर्श मैत्री का भाव प्रस्तुत करती है।

"नदी वेतवा के संग्राम" में लाखन का सामना दिल्ली-नरेश पृथ्वीराज चौहान से होता है। इस युद्ध में जब महाराज पृथ्वीराज को अपने मुँह की खानी पड़ती है, तो वे क्रोधित होकर शब्दभेदी वाण का प्रयोग करते हैं जिसे लाखन दैवीय अस्त्र "चक्र" के प्रयोग से नाकाम कर देते हैं। वे दिल्ली की विशाल सेना का मोहरा मारकर, नदी-वेतवा के सभी घाटों को मुक्त करवाते हैं और गांजर युद्ध में उदल के सहयोग हेतु मैत्री दायित्व का निर्वाह करते हैं। ऐसा माना जाता है, कि कीरत सागर के संग्राम में भी लाखन ने महोबा जाकर परमर्दिदेव के पक्ष में युद्ध करके, उदल के प्रति मित्रता के

॥1॥ बृहत् आल्हखण्ड : खेमराज कृत, पृ.सं. 435.

दायित्व का निर्वाह किया था । परन्तु नदी बेतवा की विजय का सेहरा लाखन के मस्तक पर ही बंधता है । उक्त युद्ध में लाखन का अपूर्व जौहर एवं पराक्रम अगले अध्याय में वर्णित है ।

परमाल रासो [आल्हखंड] की अन्तिम वर्णनाओं तक लाखन का मैत्रीभाव परिलक्षित होता है । वे अपने दायित्व का निर्वाह करते हुए "ब्याल सती संग्राम" में वीरगति को प्राप्त हो जाते हैं । अपने मित्र की कुर्बानी से व्यथित उदल भी जान हथेली पर रख लेता है । वह चौंडा ब्राह्मण [महाराज पृथ्वीराज के पुरोहित का पुत्र] से युद्ध करता हुआ, स्वयं धरती माता की गोद में चिर निद्रामग्न हो जाता है ।

-:****:-